होशियार सिंह

जीवन के अमृत का बढ़ता दोहन और नासमझी

जहां जल है वहीं जीवन है और यूं कहा जाए कि जल बिना जीवन संभव नहीं है तो गलत नहीं होगा। यह जल दिनों-दिन कम होता जा रहा है। आज किसी गांव या शहर पर नजर डाले तो पता चलता है कि जल की विकट समस्या उनके सामने मुंह बाए खड़ी हुई है। एक तरफ पीने के लिए जल भी शहरी क्षेत्रों में नहरों से सप्लाई हो रहा है वहीं जल के लिए मारामारी आम है। आज के भौतिकवाद में जल के लिए युद्ध हो रहे हैं। जल की एक बोतल बीस रुपये तक बिक रही है। जिस देश में एक नहीं अपितु सात बड़ी नदियां और अनेक छोटी नदियां बहती हों वहां आज जल को बोतलों में भरकर बेचा जा रहा है। एक तरफ ग्रामीण क्षेत्रों में देखा जाए तो वहां जल का दोहन हो रहा है वहीं जल की बर्बादी चल रही है। जल का पीने में, कपड़े धोने में तथा अन्य घरेलू कामों में दुरूपयोग हो रहा है।

जल ही जीवन है, जल है जीने का आधार
जल बिन नीरस, जल बिना जीवन बेकार।

जीवन का अमृत कहलाने वाला जल ने कहने को तो पृथ्वी का तीन चौथाई भाग ढ़के हुए है किंतु पेयजल के रूप में एक फीसदी से भी कम है। पेयजल ही नहीं बहु उपयोगी एवं चमत्कारी इस तरल पदार्थ को कितने ही कामों में लिया जाता है। दिनों-दिन पेयजल की मांग बढ़ रही है। कृषि में पानी की मांग चली आ रही है, वहीं जल को लेकर कई राज्यों के बीच आपसी मनमुटाव बढ़ रहे हैं। परिणाम यह है कि आने वाले दिनों में जल की भयंकर समस्या उत्पन्न हो सकती है।

जहां गंगा-यमुना बह रही, बिकता वहां बोतलों में जल,
अगर यूं बहाते रहोगे जल, तो नहीं निकलेगा कोई हल।

जहां जल है वहीं जीवन है और यूं कहा जाए कि जल बिना जीवन संभव नहीं है तो गलत नहीं होगा। यह जल दिनों-दिन कम होता जा रहा है। आज किसी गांव या शहर पर नजर डालें तो पता चलता है कि जल की विकट समस्या उनके सामने मुंह बाए खड़ी हुई है। एक तरफ पीने के लिए जल भी शहरी क्षेत्रों में नहरों से सप्लाई हो रहा है वहीं जल के लिए मारामारी आम है। आज के भौतिकवाद में जल के लिए युद्ध हो रहे हैं। जल की एक बोतल बीस रुपये तक बिक रही है। जिस देश में एक नहीं अपितु सात बड़ी नदियां और अनेक छोटी नदियां बहती हों वहां आज जल को बोतलों में भरकर बेचा जा रहा है। एक तरफ ग्रामीण क्षेत्रों में देखा जाए तो वहां जल का दोहन हो रहा है वहीं जल की बर्बादी चल रही है। जल का पीने में, कपड़े धोने में तथा अन्य घरेलू कामों में दुरूपयोग हो रहा है।

जल बिना मछली तड़पे, जल बिना प्यासे ढोर,
जल बचाकर रख लो, जल बिना नहीं है ठौर।

शहरी क्षेत्रों की बजाए जल का दुरूपयोग ग्रामीण लोग अधिक कर रहे हैं। ग्रामीण लोग तो जल की कद्र तक नहीं जानते हैं और जल को व्यर्थ बहाने

में कसर नहीं छोड़ते हैं। ग्रामीणों के यहां नलों पर टोंटी तक नहीं होती है जिसके कारण जल व्यर्थ बहता रहता है। जोहड़ों में भारी मात्रा में जल भरा रहता है। आश्चर्यजनक बात यह है कि गर्मियों में भी जोहड़ जल से भरे रहते हैं और गलियों से निकलना भी कठिन होता है जो यह इंगित करता है कि ग्रामीण लोग जल को बेकार में बहाते रहते हैं। ग्रामीण लोग तो जल के किनारे ही मलमूत्र त्यागते हैं और जल का जितना दुरूपयोग हो सके, करते हैं। कपड़े धोने में तथा घरेलू कार्यों में जमकर जल का दुरूपयोग करते हैं।

जल एक चक्र की भांति धरती पर घूमता रहता है। जब बादल बनते हैं तो धरती पर बारिश के रूप में पानी आ जाता है। यह देखने में आ रहा है कि वर्ष 1995 में कुछ अच्छी बारिश हुई थी वरना बारिश अच्छी न होने के कारण प्रत्येक वर्ष पृथ्वी का जल स्तर गिरता ही चला जा रहा है। कितने ही क्षेत्रों में डार्क जोन होने के कारण जल का अभाव चल रहा है। कुछ जगह जल तो है किंतु उन क्षेत्रों में लोगों का जमावड़ा होने के कारण जल की मांग बढ़ रही है। लेकिन एक प्रश्न हर इंसान के दिलोदिमाग में घर करता जा रहा है कि कितने दिनों तक धरती में जल और रहेगा। आखिरकार जल के बिना कैसे जीवन संभव होगा।

जीवन की भांति जल भी बहता, जल सदा स्थिर रहता,
जल की स्थिति को समझिए, बार-बार जल यह कहता।

जल एक चक्र की भांति धरती पर घूमता रहता है। जब बादल बनते हैं तो धरती पर बारिश के रूप में पानी आ जाता है। यह देखने में आ रहा है कि वर्ष 1995 में कुछ अच्छी बारिश हुई थी वरना बारिश अच्छी न होने के कारण प्रत्येक वर्ष पृथ्वी का जल स्तर गिरता ही चला जा रहा है। कितने ही क्षेत्रों में डार्क जोन होने के कारण जल का अभाव चल रहा है। कुछ जगह जल तो है किंतु उन क्षेत्रों में लोगों का अधिक जमावड़ा होने के कारण जल की मांग बढ़ रही है। लेकिन एक प्रश्न हर इंसान के दिलोदिमाग में घर करता जा रहा है कि कितने दिनों तक धरती में जल और रहेगा। आखिरकार जल के बिना कैसे जीवन संभव होगा।

सूना-सूना जीवन होगा, बिना जल कैसी कल्पना,
अमृतमय जल बचा लो, जल बिना जीवन सपना।

जल जीवन होते हुए भी लोग जल के संरक्षण के लिए गंभीर नहीं हैं। कहते हैं कि ठोकर नहीं लगती तब तक इंसान नहीं संभलता अब ठोकर भी लगने जा रही है। अगर इंसान ने जीवन का अस्तित्व बनाए रखना है तो धरती पर जल की अनवरत मात्रा बनाए रखनी होगी। इंसान चंद्रमा पर जाने की बात कर रहा है किंतु वहां जल का अभाव होने के कारण उसके जीवन को प्रश्नवाचक चिन्ह लग जाता है। सरकार, आम जन और किसान अगर जल के मुद्दे को गंभीरता से ले तो आने वाले समय में कुछ वर्षों तक जल और मिल सकता है। रहीम ने भी तो यही कहा है-रहिमन जल राखिए, जल बिना सब सून। जल के बिना सब कुछ सूना-सूना होता है आवश्यकता है जल के प्रति गंभीर रहने की।

अगर यूं बहाते रहोगे जल, तो नहीं निकलेगा कोई हल।

आओ जुट जाएं, आओ बचाएं, बच जाएगा इंसान,
बहा दोगे जल को, पछताओगे, नहीं बचेगा जहान।

जल को धरा पर बचाने के लिए आम जन को जल के प्रति सचेत करना चाहिए और जल की कमी के दुष्परिणामों की जानकारी देनी चाहिए। इस क्षेत्र में कितने ही हीरो और खिलाड़ी अगर जल के संरक्षण के बारे में जानकारी दें तो हो सकता है कि जल के बारे में जन सोचने लग जाए। विद्यालयों में, शिक्षकों द्वारा, पुस्तकों में जल के पाठ लगाकर तथा जल की पुनरपूर्ति के उपायों के बारे में जानकारी देकर ही जल को बचाया जा सकता है। जल तो सोने-चांदी और हीरे से भी मूल्यवान होता है। जल को खराब होने से बचाने के सार्थक उपाय करने चाहिए।

अमृत जल होता था, आज मलीन हो गया,
निरोगी जीवन होता था, अब कहां खो गया,
साफ पानी नहीं मिलता, बिकता बाजारों में,
मन से काले हो गए, भिन्नता आज विचारों में,
युद्ध हो रहा, हो रहे हैं दंगे, पानी बड़ी चीज
पानी नहीं उगता, पानी का नहीं बना है बीज,
समय है बदल जा इंसान, वरना हाथ मलेगा
असंभव है, बिना पानी जीवन नहीं चलेगा।

संपर्क करें:
होशियार सिंह,
मोहल्ला-मोदीका कनीना
जिला महेंद्रगढ